"घनानन्द की प्रेम व्यंजना"

रीतिमुक्त स्वच्छन्द काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि घनानन्द हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट स्वच्छन्द प्रेमी कवि हैं। इनकी कविता प्रेमोद्गारों की अक्षय निधि है और हिन्दी काव्य की चिर स्थायी सम्पत्ति है। घनानन्द का प्रेम विशुद्ध लौकिक प्रेम था। वे मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार में रहने वाली सुजान नामक नर्तकी से प्रेम करते थे, किन्तु उसके छलकपट पूर्ण व्यवहार से वे भीतर तक व्यथित हो गए। उनका हृदय 'चाह के रंग' में भीगा था। प्रिय भले ही निष्ठुर एवं निर्मम हो, किन्तु घनानन्द एकनिष्ठ एवं अनन्य प्रेमी हैं। भले ही प्रिय ने उनके साथ विश्वासघात किया, किन्तु वे जीवन-पर्यन्त सुजान से प्रेम करते रहे। सुजान से प्रेम करने वाले घनानन्द की सम्पूर्ण काव्य साधना प्रेमोद्गारों की अक्षय निधि है। इनकी प्रेम पद्धति वियोग व्यथा से ओत-प्रोत है, वैयक्तिकता से जुड़ी हुई है तथा उसमें अलौकिकता, नवीनता, मार्मिकता, कष्ट सहिष्णुता जैसे गुण विद्यमान हैं। उनकी कविता में प्रेम का सरल, सहज एवं स्वच्छन्द रूप दिखाई पड़ता है, जिसमें उदात्तता विद्यमान है। घनानन्द प्रेम की पीर के कवि हैं। प्रेम विभोर हृदय की कोई ऐसी वृत्ति नहीं है, जिसका चित्रण घनानन्द ने न किया हो। इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है— "प्रेम की गूढ़ अन्तर्दशा का उद्घाटन जैसा इनमें है, वैसा हिन्दी के किसी अन्य शृंगारी कवि में नहीं।" घनानन्द का मानना था कि प्रेममार्ग तो सरल, सीधा,

निश्छल होता है, जहाँ चतुराई और कपट के लिए रंचमात्र भी स्थान नहीं है—

"अति सूधो सनेह को मारग है, जहँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपुनपौ झिझकै कपटी जे निसाँक नहीं।
घन आनँद प्यारे सुजान सुनौ इत एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥"

घनानंद के प्रेम में 'उपालम्भ' भावना दिखाई देती है। उन्हें प्रिय से यह शिकायत है कि यदि तुम्हें ऐसा ही निष्ठुर एवं निर्मम व्यवहार करना था, तो पहले अपने रूपजाल में मेरे मन को क्यों बाँध लिया तथा अमृत सने वचन बोलकर मेरे मन में काम भाव क्यों उत्पन्न किया—

"क्यों हँसि हेरि हर्‌यो हियरा अब क्यों हित कै चित चाह बढ़ाई?
काहे को बोलि सुधासने बैननि चैननि मैन निसेन चढ़ाई।"

घनानन्द के प्रेम की एक अन्य विशेषता है— नैसर्गिकता एवं अकृत्रिमता। वे स्वच्छन्द प्रेम के कवि हैं। अतः उनका प्रेम चित्रण बंधी-बधाई परिपाटी में न होकर नैसर्गिक है। प्रिय भले ही निष्ठुर हो पर वे तो चकोर की भाँति उस चन्द्रमा की ओर ही अमृत वर्षा के लिए टकटकी लगाए रहेंगे। प्रेममार्ग पर घनानन्द बहादुरी से डटे हुए हैं। इसलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उनके सम्बन्ध में लिखा है— "प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।" घनानन्द के प्रेम का मूल आधार 'सौन्दर्य' है। उनकी प्रेयसी सुजान अनिंद्य सुन्दरी थी। उसका सौन्दर्य घनानन्द

के रोम-रोम में बसा है। वे उसके इस सौन्दर्य का चित्रण बड़े मनोयोग से करते हैं। यह सौन्दर्य चिर नवीन है —

"रावरे रूप की रीति अनूप, नयो-नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिए।
त्यो इन आँखिन बानि अनोखी, अघानि कहूँ नहिं आन तिहारिए॥

इतना ही नहीं घनानन्द के प्रेम में कष्ट सहिष्णुता का भी गुण विद्यमान है। वे हर प्रकार का कष्ट सहन करने को तैयार हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के कष्टों में तपते हुए प्रिय के निष्ठुर हृदय में दया उत्पन्न करने का प्रण लिया हुआ है। वे आशा की रस्सी से विश्वास के पत्थर को हृदय पर बांधकर प्रेम के समुद्र में डूबने को तत्पर हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य है कि वह अपने कष्टमय जीवन को दिखाकर प्रिय के निष्ठुर हृदय में दया उत्पन्न करें —

"आसा गुन बाँधि के भरोसो सिल च्यारि छाती,
पूरे पन सिन्धु में न बूड़त सकाय हौं।
ऐसे घन आनन्द गही है टेक मन माँहि,
ए रे निरदई तोहि दया उपजाय हौं॥"

घनानन्द विरह में तपे हुए थे। उनके हृदय में विरह का अथाह सागर हिलोरें ले रहा था। उनके विरह में बाहरी उछलकूद, शारीरिक ताप की अधिकता या विरहजन्य दुर्बलता का उल्लेख नहीं है, अपितु उसमें हृदय की तड़प, वेदना की अतिशयता एवं विरहाकुलता है। विरह ही उनके प्रेम की कसौटी है। वे चिरंतन वेदना से युक्त ऐसे प्रेमी हैं, जिनके

प्राण रात-दिन इस विरह वेदना में घुट-घुटकर जलते रहते हैं। आँखों से अश्रु प्रवाहित होते रहते हैं —

"रैन दिना घुटिबो करैं प्रान, झरैं अँखियाँ दुखिया झरना सी।
प्रीतम की सुधि अन्तर में कसकैं सखि ज्यों पँसरीन में गाँसी॥"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि घनानन्द की प्रेम व्यंजना सूक्ष्म है, उसमें स्थूलता एवं मांसलता का नितान्त अभाव है। घनानन्द के काव्य की मूल सम्वेदना प्रेम है तथा उसी से उनका सारा काव्य स्पंदित हो रहा है। उनके इस प्रेम में स्वानुभूति की तीव्रता भरी हुई है और वह उनके व्यक्तित्व के संस्पर्श से और भी अधिक दिव्य एवं अलौकिक बन गयी है। घनानन्द के इस प्रेम में नवीनता, तीव्रता, सरसता, मार्मिकता और सहृदय-सम्वेद्यता है। घनानन्द का यह प्रेम आत्मानुभूति का ज्वलंत प्रतीक है; इसी कारण इसमें नैसर्गिकता, उदात्तता, व्यापकता, अनन्यता, दिव्यता, गहनता, एकनिष्ठा, आत्मसमर्पण, सर्वस्व त्याग एवं शाश्वत मिलन-विरह की स्थिति के दर्शन होते हैं। निस्संदेह घनानन्द की प्रेमानुभूति अन्तर स्पर्श करने वाली है और इसमें जीवनगत तथ्य एवं भावगत सत्य अन्तर्निहित है।